प्रमुख अलंकार : परिचय एवं उदाहरण (बी. ए. प्रतिष्ठा हिंदी, तृतीय वर्ष, पत्र 8 एवं अनुपूरक/ वैकल्पिक हिंदी प्रथम वर्ष)

डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर, ल. ना. मि. वि. वि.

अलंकार का सामान्य अर्थ है- अलंकृत करने वाला, शोभा बढ़ाने वाला। जिस प्रकार आभूषण शरीर की सुंदरता में अभिवृद्धि करता है, उसी प्रकार अलंकार साहित्य का सौंदर्य बढ़ता है। अलंकारवादी आचार्यों ने अलंकार को काव्य की आत्मा कहा है। रीतिकालीन कवि केशव काव्य में अलंकार को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उनका कथन है-

“जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुबृत।

भूषण बिनु न विराजई कविता वनिता मित्त।।”

अलंकार का प्रमुख कार्य शोभावृद्धि है। अलंकार किसी वस्तु या व्यक्ति के सौंदर्य में वृद्धि करता है। साहित्य में अलंकार के प्रयोग से कथन, उक्ति या वाक्य को सुंदर एवं चमत्कारिक बनाया जाता है। अलंकारों के प्रयोग से काव्य में सौंदर्य की वृद्धि तो होती ही है, नवीन सौंदर्य की सृष्टि भी होती है। अलंकार के प्रयोग से किसी कथन को असाधारण एवं चमत्कारपूर्ण ढंग से व्यक्त किया जाता है।

कुछ प्रमुख अलंकार निम्नलिखित हैं-

1. वृत्यानुप्रास-

   अनुप्रास अलंकार के पाँच प्रमुख प्रकारों में से एक वृत्यानुप्रास है। काव्य में जहाँ एक या अनेक व्यंजन वर्ण दो से अधिक बार, अर्थात अनेक बार शब्द के आरंभ या अंत में क्रम से आता है वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है।

   जैसे-

   “कारी कूरि कोकिला कहाँ को बैरी काढ़ति री।

   कूकि-कूकि अबरी करै जो किन कोरि लै।”

   घनानंद की इन पंक्तियों में ‘क’ वर्ण की शब्द के आरंभ में अनेक बार आवृति हुई है, अतः यहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार है।

2. श्लेष-

   श्लेष का अर्थ होता है चिपकना। अर्थात इस अलंकार में एक शब्द से एक से अधिक अर्थ चिपके होते हैं। काव्य में जहाँ प्रसंगवश किसी एक शब्द से अनेक अर्थ निकलते हों वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

   जैसे-

   “मंगन को देख पट देत बार-बार है।“

   यहाँ ‘पट’ का एक अर्थ है वस्त्र और दूसरा अर्थ है दरवाजा। अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

3. यमक-

   काव्य में जहाँ पर किसी एक ही शब्द की आवृत्ति होती है, और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न होता है वहाँ पर यमक अलंकार होता है। जैसे-

   “कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।

   वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय।।”

   बिहारी के इस दोहे में ‘कनक’ शब्द की आवृत्ति हुई है, जिनका क्रमशः अर्थ है- धतूरा और स्वर्ण। धतूरा को तो खाने से नशा होता है, पर सोने को पा लेने से ही नशा हो जाता है। कनक शब्द की आवृत्ति और प्रत्येक बार भिन्न अर्थ के कारण यहाँ यमक अलंकार है।

4. उपमा-

   काव्य में जहाँ पर किसी विशेष गुण या स्वभाव की समानता के कारण किसी वस्तु, व्यक्ति या प्राणी की तुलना किसी लोकप्रसिद्ध

व्यक्ति या वस्तु से की जाय वहाँ उपमा अलंकार होता है। जिसकी तुलना की जाती है उसे उपमेय कहते हैं, जिससे तुलना की जाती है उसे उपमान कहते हैं, जिस समानता के कारण तुलना की जाती है उसे समानधर्म कहते हैं। अतः काव्य में जहाँ उपमेय की उपमान से रूप, गुण एवं आकार-प्रकार की समानता बताई जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे-

“सिंधु-सा विस्तृत और अथाह।

एक निर्वासित का उत्साह।।”

इन पंक्तियों में निर्वासित राम का उत्साह सिंधु (समुद्र) के समान विस्तृत एवं अथाह बताया गया है। यहाँ उपमेय है – उत्साह, उपमान है- सिंधु और साधारण धर्म है- विस्तृत और अथाह।

5. उत्प्रेक्षा-

काव्य में जहाँ पर उपमेय और उपमान की भिन्नता के बावजूद उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस अलंकार में प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना व्यक्त की जाती है। जैसे-

“सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।

मनहुं नीलमनि सैल पर, आतप परयो प्रभात।।”

बिहारी के इस दोहे में कृष्ण में नीलमनि पर्वत और पीले वस्त्र में प्रातःकालीन धूप की संभावना व्यक्त की गयी है, अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

6. रूपक-

काव्य में जहाँ उपमेय पर उपमान को आरोपित कर दिया जाता है वहाँ रूपक अलंकार होता है। उपमेय और उपमान में भिन्नता होते हुए भी समानता के कारण उपमेय पर उपमान को आरोपित कर दिया जाता है। जैसे-

“बीती विभावरी जाग री

अंबर पनघट में डुबो रही

तारा घट उषा नागरी”

जयशंकर प्रसाद की इन पंक्तियों में अंबर पर पनघट को, तारा पर घट को और उषा पर नागरी को आरोपित कर दिया गया है। ये पंक्तियाँ रूपक अलंकार का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

7. अतिशयोक्ति-

काव्य में जहाँ किसी बात को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। जैसे-

“पत्रा ही तिथि पाइये, वा घर के चहुँ पास।

नित प्रति पून्योई रहत, आनन ओप उजास।।”

बिहारी के इस दोहे में नायिका के सौंदर्य को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया है। उसके मुखमण्डल की आभा से उसके आसपास चारों ओर हर समय पूर्णमासी ही रहती है, बिना पत्रा देखे तिथि की जानकारी नहीं मिल पाती है। मुखसौंदर्य को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करने के कारण यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

8. दीपक अलंकार-

काव्य में जहाँ प्रस्तुत और अप्रस्तुत के मध्य एक ही साधारण धर्म से अभिसंबंध रहता है अथवा एक से अधिक पदों का साधारण धर्म एक ही रहता है, वहाँ दीपक अलंकार होता है। कहा जाता है कि जिस प्रकार देहरी पर जलता हुआ दीपक एक साथ ही सम्पूर्ण कक्ष के भीतर और बाहर भी प्रकाश भर देता है, उसी प्रकार एक ही साधारण धर्म सभी पदों को सुशोभित करता रहता है।

जैसे-

“भूपति सोहत दान सों, फल-फूल उद्यान”

यहाँ दोनों पदों को एक ही साधारण धर्म 'सोहना' सुशोभित कर रहा है।

9. अर्थान्तरन्यास-

   काव्य में जहाँ सामान्य कथन का विशेष कथन द्वारा और विशेष कथन का सामान्य कथन द्वारा समर्थन किया जाता है वहाँ अर्थांतरन्यास अलंकार होता है। प्रस्तुत अर्थ का अप्रस्तुत अन्य अर्थ द्वारा स्थापन करके समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थांतरन्यास अलंकार होता है।

   जैसे-

   "कृष्ण ने बचाया ब्रज इन्द्र के प्रकोप से था,

   करते महान जन काम कौन से नहीं?"

   इन पंक्तियों में कृष्ण द्वारा ब्रज की रक्षा करना विशेष बात है, इसका समर्थन महान जन कौनसा काम नहीं करते हैं, इस सामान्य वाक्य से किया गया है। इस प्रकार यहाँ प्रस्तुत (वर्ण्य) में अप्रस्तुत (अवर्ण्य) का स्थापन करने से अर्थांतरन्यास अलंकार है।

10. प्रतिवस्तूपमा-

    जहाँ काव्य में प्रत्येक वस्तु की अलग-अलग उपमा होती है वहाँ प्रतिवस्तूपमा अलंकार होता है।

    जैसे-

    "राजत मुख मृदुबानी सों, लसत सुधा सों चंद।

    निर्झर सों नीको सुगिरी, मद सों भली गयंद॥"

    यहाँ राजत, लसत, नीको, भलो आदि विभिन्न उपमाएँ एक ही सामान्य धर्म 'शोभा' के लिए प्रयोग की गई हैं। बानी, चाँद, पर्वत, हाथी इत्यादि के लिए अलग-अलग उपमाएँ दी गई हैं, इसलिए यहाँ प्रतिवस्तूपमा अलंकार है।